Dr. M.K. Jha.
Dept of Sociology
V.S.J College, Rajnagar.

B.A. part - II
Paper - III
Indian Society

प्रश्न- भारतीय समाज की विशेषताओं की विवेचना कीजिए।

Ans - भारतीय समाजशास्त्र में समाज का अध्ययन क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित ढंग से किया जाता है। भारतीय समाज का इतिहास करीब 5,000 वर्ष पुराना है यहां के ऋषि- मुनियों, विचारकों और चिन्तकों के अनुभव पर समाज का निर्माण हुआ है भारतीय विचारकों ने व्यक्ति और समाज में सामंजस्य कर अधिक उत्तम समाज का निर्माण किए है। जिसमें जीवन मूल्यों और आदर्श के द्वारा सामाजिक सम्बन्ध, सामाजिक व्यवहार और कर्मशक्ति का विकास किया गया है। जो भारतीय समाज का आधार है।

भारतीय समाज की विशेषताएं -

भारतीय समाज की प्रमुख विशेषताएं निम्न हैं:-

1. वर्ण व्यवस्था - भारतीय समाज की धुरी वर्ण व्यवस्था है। व्यक्ति के गुण तथा स्वभाव के आधार पर समाज को चार वर्णों में विभाजित किया गया है। भारत में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र को वर्ण व्यवस्था के अधीन रखा गया है। प्रत्येक वर्ण के अधिकार, दायित्व और व्यवसाय एक- दूसरे से भिन्न होते हैं लेकिन ये चारों वर्ण कर्म- विभाजन के आधार पर भारतीय समाज का निर्माण किए है। वर्ण व्यवस्था में open system के विशेषताएं पाए जाते हैं।

2. जातिव्यवस्था - भारतीय सामाजिक संगठन का आधार जाति-व्यवस्था है। जाति को बन्द स्तरीकरण कहा गया है जाति की सदस्यता जन्म पर आधारित है। भारत में तीन हजार जाति-उपजातियों की संख्या लगभग है। प्रत्येक जाति के पेशा जन्म पर आधारित रहता है। भारत में जाति के द्वारा श्रम-विभाजन व कार्यविभाजन होने से भारतीय समाज की व्यवस्था बनी थी। इधर जाति के स्वरूप एवं कार्य में व्यापक अन्तर हुआ है।

3. आश्रम व्यवस्था :-

आश्रम व्यवस्था व्यक्ति के जीवन एवं मूल्यों को संगठित करता है। इस व्यवस्था में व्यक्ति की आयु 100 वर्ष मान कर, 25-25 वर्ष के आधार पर चार आश्रम बनाया गया है। जैसे ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम, वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम उल्लेखनीय है। प्रत्येक आश्रम का आयु 25 वर्ष माना गया है। ब्रह्मचर्य आश्रम में कर्तव्य-शिक्षा एवं मानसिक ज्ञान दिया जाता है गृहस्थ आश्रम विभिन्न ऋण से उऋण, एवं पारिवारिक दायित्व का ज्ञान दिया जाता है वहीं वानप्रस्थ आश्रम आध्यात्मिक विकास और संन्यास आश्रम द्वारा मोक्ष की कामना की जाती है। अर्थात् आश्रम व्यवस्था व्यक्तित्व विकास और सामाजिक दायित्व के चार चरण हैं।

Scanned with Cam

4. संयुक्त-परिवार - मैक्समूलर ने संयुक्त परिवार को भारत की आदि-परम्परा माना है जो सदियों से भारतीयों को सामाजिक विरासत के रूप में प्राप्त होती है। संयुक्त परिवार समाज का महत्वपूर्ण इकाई है जिसमें तीन-चार पीढ़ियों के रक्त सम्बन्धी आत्मीयता और समूह कल्याण की भावना से जीवन यापन करते हैं। इधर इसके संरचना एवं कार्य में परिवर्तन हो रहा है।

5. गाँव-पंचायतों का महत्व: भारतीय समाज में पंचायतें ग्रामीण गणतंत्र के रूप में सदैव मान्य है जब भारत में लोकतांत्रिक शक्तियों का विकास हुआ तब से गाँव-पंचायत न्याय, शासन और सम्मान का प्रजातांत्रिक इकाई बन गया है जिसमें महिला और पिछड़ा एवं दलित की सहभागिता काफी बढ़ी है।

6. धर्म की प्रधानता - भारतीय समाज को एक धर्म प्रधान समाज कहा जाता है। धर्म एक ऐसा शक्ति है जो व्यक्ति में एकता, सामूहिकता, सच्चरित्रता और उदारता के गुण उत्पन्न करती है। भारतीय समाज में सामान्य धर्म, विशिष्ट धर्म, राज धर्म, मित्र धर्म, कुल धर्म, गुरु धर्म, युग धर्म एवं आपद्धर्म से समाज को संचालित एवं नियंत्रित किया जाता है।

7. पुरुषार्थ का महत्व: भारतीय समाज में प्रयत्न एवं कार्य सम्पादन को पुरुषार्थ की अवधारणा दिया गया है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये पुरुषार्थ के चरण है। धर्म नैतिक कार्य, आत्मसंयम एवं दया का आधार है। अर्थ भौतिक-साधन द्वारा आवश्यकता पूर्ति के लिए है काम को प्राणिशास्त्रीय आवश्यकता एवं समाज के निरन्तरता के लिए स्वीकार किया गया है वही मोक्ष व्यक्ति को ब्रह्मानन्द एवं जीवन-मरण से छुटकारा के लिए है अर्थात् पुरुषार्थ के ये चार-भाग जीवन में पूर्ण किया जाता है।

8. संस्कार - भारतीय समाज में शुद्धि करण एवं समाजीकरण के लिए 16 संस्कार का विधान है जो गर्भाधान, पुंसवन, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, कर्णवेध, विद्यारम्भ, उपनयन, विवाह और अन्त्येष्टि आदि द्वारा व्यक्ति को परिमार्जन करता है। जो व्यक्तित्व विकास एवं सामाजिक जीवन शैली का आधार है।

9. प्राचीनता तथा मौलिकता! - भारतीय समाज पाँच हजार वर्ष से भारतीय संस्कृति एवं जीवन सूत्र को रक्षा कर रही है भारतीय समाज के मौलिकता के कारण आज सांस्कृतिक, भौगोलिक और सामाजिक समरसता बनी हुई है।

10. स्थायित्व - भारतीय समाज पर शक, हूण, मंगोल और कितने ही विदेशी समूह का आक्रमण हुआ। लेकिन भारतीय समाज संस्कृति में एकता और भिन्नता में पूर्णता के कारण स्थायित्व रहा है।

अतएव, भारतीय समाज का दार्शनिक आधार एवं संगठनात्मक आधार पर कई विशेषताएँ सदैव बनती रही है लेकिन समतावादी, धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक व्यवस्था आज भारतीय समाज की सुस्पष्ट विशेषताओं में उल्लेखनीय है।

Scanned with Cam